शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-१०-२०१८

वर्ष - २९ अंक - १० अक्टूबर २०१८ विक्रम संवत् २०७५ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

"हम संघ का वर्चस्व नहीं चाहते। हम समाज का वर्चस्व चाहते हैं।
समाज में अच्छे कामों के लिए संघ के वर्चस्व की आवश्यकता पड़े
संघ इस स्थिति को वांछित नहीं मानता, अपितु समाज के
सकारात्मक कार्य समाज के सामान्य लोगों द्वारा ही
पूरे किए जा सकें, यही संघ का लक्ष्य है।"

- डॉ. मोहन भागवत,
प.पू. सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

ॐ

भविष्य का भारत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

भविष्य का भारत – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण, व्याख्यानमाला, नई दिल्ली – 17, 18, 19 सितम्बर 2018

प्रान्त के संघ शिक्षा वर्ग, तृतीय वर्ष शिक्षितों का ''प्रेरणा शिविर'' बिलासपुर (छ.ग.) – 21, 22, 23 सितम्बर 2018

''शाश्वत राष्ट्रबोध'' जागरण पत्रिका पाठक सम्मेलन

विकासखण्ड – बागबाहरा (जि. महासमुंद) – 16-09-2018

विकासखण्ड – कुनकुरी (जि. जशपुर) – 22-09-2018

सुभाषित

यथा हि एकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
एवं पुरूषकारेण विना दैवं न सिध्यति॥

अर्थात्– जिस प्रकार एक पहिया वाले रथ की गति संभव नहीं है, उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना केवल भाग्य से कार्य सिद्ध नहीं होते हैं।

संपादकीय

हम अतीत से सीख सुनहरे भारत का निर्माण करें

अपने अतीत के अनुभव से स्वर्णिम भविष्य की संकल्पना के आधार पर योजनाबद्ध होकर कार्य करना हमारी दूरदृष्टि का प्रतीक रहा है। ऐसी संकल्पनाओं में निजी स्वार्थ से परे होकर समाज तथा लोक कल्याण की बलवती भावना हमारा मार्ग सुगम और सहज करती रही है। समय-समय पर उत्पन्न परिस्थितियों का विचार कर अपने आवश्यकता के अनुसार करणीय तथा अकरणीय कार्यों को चिन्हित कर आचरण में ढाल लेने के फलस्वरुप हमारी अक्षुण्णता बनी हुई है। अनेक क्षेत्रों में लक्ष्य निर्धारित कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के उदाहरण भरे पड़े है।

समाज को संगठित कर संविधान के अनुसार चलते हुए आवश्यकतानुसार परिवर्तन हमारे कार्य का आधार है। कभी अपना वर्चस्व स्थापित करने का कोई प्रयास न करते हुए सदैव समाज का ही वर्चस्व बनाए रखने की हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति रही है।

सदियों से हमारे ऋषियों ने विश्व बन्धुत्व का जो सर्वमान्य विचार दिया है, उसके पोषण में ही अखिल विश्व का हित निहित है। हमारे कार्य में संलग्न सभी घटकों का स्वागत करना हमारी परम्परा का अभिन्न अंग रहा है और हम उसके लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारी मान्यता रही है कि —

जो अतीत की भूलों से कुछ सीख लिया करते हैं,
पाकर अपना लक्ष्य मार्ग जग का प्रशस्त करते हैं।
नश्वर तन की चाह नहीं यह दिन चार रहे न रहे,
तेरा वैभव अमर रहे माँ विनय यही करते हैं॥

ए महिना के तिहार

ए महीना म पितर पाख के गए ले दस तारीक ले नवरात सुरू होही। सोला तारीक के सातें, सतरा तारीक के आठे अऊ अठरा तारीक के दुर्गानवमी परिही। दसैरा (विजयादशमी) उन्नीस तारीक के, शरद पुन्नी चौबीस अऊ करवाचौथ सत्ताइस तारीक के परिही। अहोई आठे इकतीस तारीक के हवय। महिना के पहिली एकादसी (इंदिरा) पाँच तारीक अऊ दूसर एकादसी (पापांकुशा) बीस तारीक के परिही।

इंदिरा एकादशी	**– आश्विन कृ. 11**	**– 05 अक्टूबर**
नवरात्र प्रारंभ	**– आश्विन शु. 01**	**– 10 अक्टूबर**
दुर्गा अष्टमी	**– आश्विन शु. 08**	**– 17 अक्टूबर**
दुर्गानवमी	**– आश्विन शु. 09**	**– 18 अक्टूबर**
विजयादशमी	**– आश्विन शु. 10**	**– 19 अक्टूबर**
पापांकुशा एकादशी	**– आश्विन शु. 11**	**– 20 अक्टूबर**
शरद पूर्णिमा	**– आश्विन शु. 15**	**– 24 अक्टूबर**
करवा चौथ व्रत	**– कार्तिक कृ. 04**	**– 27 अक्टूबर**
अहोई अष्टमी	**– कार्तिक कृ. 08**	**– 31 अक्टूबर**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग दस तारीक के महाराजा अग्रसेन, चौबीस तारीक के महर्षि वाल्मीकि अऊ इकतीस तारीक के आचार्य नरेंद्र देव के जयंती घलौ परिही। आठ तारीक के मुंशी प्रेमचन्द अऊ बारा तारीक के राममनोहर लोहिया के पुण्यतिथि घलौ हवय।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म पहिली तारीक के अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन अऊ स्वैच्छिक रक्तदान दिवस, दू तारीक के विश्व स्वच्छता अऊ अहिंसा दिवस, चार तारीक के राष्ट्रीय अखण्डता दिवस, आठ तारीक के वायुसेना दिवस, दस तारीक के विश्व मानसिक स्वास्थ्य अऊ राष्ट्रीय डाक दिवस, पन्द्रा तारीक के विश्व छात्र दिवस, सोला तारीक के विश्व खाद्य दिवस, इक्कीस तारीक के आजाद हिन्द सेना दिवस अऊ चौबीस तारीक के संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार - जय माँ भारती।

वनवासियों के लिए छोड़ दिया सिला वस्त्र पहनना

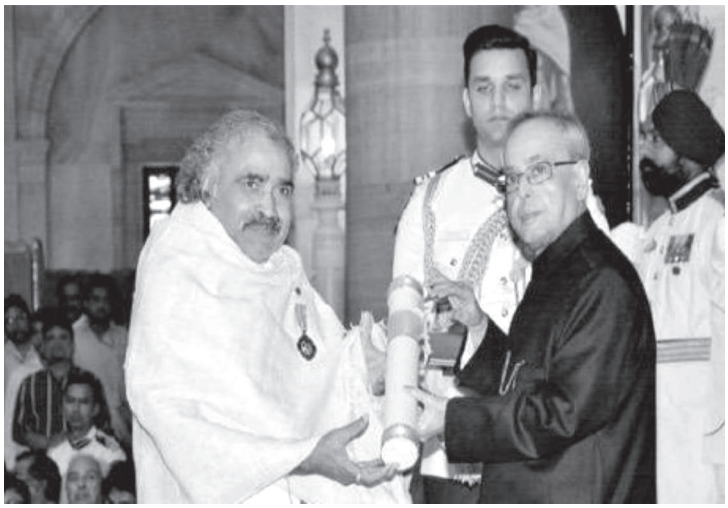

महात्मा गांधी ने गरीबों की दुर्दशा देख सादगी धारण कर ली थी, ठीक उसी तरह झारखंड के गरीब वनवासियों को बदहाली से उबारने के लिए जीवन समर्पित कर देने वाले पद्मश्री अशोक भगत का उदाहरण है। भगत ने 32 साल पहले प्रण लिया था कि जब तक वनवासियों के तन पर कपड़ा नहीं होगा, जब तक उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार उपलब्ध नहीं होगा और जब तक वनवासी मुख्य धारा से नहीं जुड़ जाएंगे, वे सिला वस्त्र नहीं पहनेंगे, सिर्फ धोती व गमछा ही धारण करेंगे।

पद्मश्री से सम्मानित और विकास भारती संस्था, बिशुनपुर के सचिव अशोक भगत को सभी अब बाबा के नाम से ही पुकारते हैं। जनजातीय समाज के समेकित विकास के लिए प्रतिबद्ध भगत ने वनवासियों के बीच काम करने के लिए वेश ही नहीं नाम तक बदल डाला। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ के किशुनदासपुर निवासी अशोक राय जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ अधिकारियों भाऊराव देवरस एवं प्रो. राजेंद्र सिंह उर्फ रज्जू भैया की प्रेरणा से झारखंड के गुमला जिले के बिशुनपुर (उस समय के बिहार) में अपने तीन आईआईटीयन साथियों डॉ. महेश शर्मा, रजनीश अरोड़ा और स्व. राकेश पोपली के साथ काम करने आए तो कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि जतरा ताना भगत की इस धरती पर यदि काम करना है तो उन्हीं के अनुसार रहना और जीना पड़ेगा।

उन्होंने वर्ष 1983 में अपना नाम बदल कर अशोक राय से अशोक भगत रख लिया, जो आज बाबा के रूप में प्रसिद्ध हो चुके हैं। इनके प्रयास से इलाके की स्थिति काफी बदल गई है। क्षेत्र में पलायन रुक गया। हजारों लोगों को रोजगार मिला। वनवासियों के जल, जंगल एवं जमीन बचाने के लिए जो आंदोलन उन्होंने शुरू किया, वह आज सफलता हासिल कर रहा है। हजारों महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ चुके हैं। उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों के लगभग 2000 बच्चों को विकास भारती द्वारा संचालित स्कूल-छात्रावास में शिक्षा मुहैया कराई जा रही है।

विकास भारती संस्था अशोक भगत के मार्गदर्शन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रेरक प्रसंग

माथे पर सदा महान भारत

अपने ढाई वर्ष के अमरीका निवास में स्वामी रामतीर्थ को भेंट स्वरूप जो प्रमुख धनराशि मिली थी वह सब उन्होंने अन्य देशों के बुभुक्षितों (भूखों) के लिए समर्पित कर दी। उनके पास रह गया केवल एक अमरीकी परिधान (पोशाक)।

स्वामी रामतीर्थ अमरीका से वापस लौट आने के बाद एक दिन वे वस्त्र पहनने लगे। कोट-पैंट पहनने के बजाय उन्होंने कंधों पर लटका लिये और अमरीकी जूते पाँव में डालकर खड़े हो गये। बहुमूल्य टोप के स्थान पर उन्होंने अपना सादा साफा ही सिर पर बाँधा।

जब उनसे पूछा गया-''आपने इतना सुन्दर हैट तो पहना ही नहीं।'' तो बड़ी मस्ती से उन्होंने उत्तर दिया-''राम के सिर-माथे पर तो सदैव महान् भारत ही रहेगा, यद्यपि अमरीका पाँवों में पड़ा रह सकता है...''

इतना कहकर उन्होंने नीचे झुककर मातृभूमि की मिट्टी उठाकर माथे पर लगा ली।

हम संघ का नहीं समाज का वर्चस्व चाहते है

— डॉ. मोहन भागवत

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि ''हम संघ का वर्चस्व नहीं चाहते। हम समाज का वर्चस्व चाहते हैं। समाज में अच्छे कामों के लिए संघ के वर्चस्व की आवश्यकता पड़े संघ इस स्थिति को वांछित नहीं मानता, अपितु समाज के सकारात्मक कार्य समाज के सामान्य लोगों द्वारा ही पूरे किए जा सकें, यही संघ का लक्ष्य है।'' सरसंघचालक जी 'भविष्य का भारत – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण' विषय पर अपने तीन दिवसीय व्याख्यान के पहले दिन के सत्र को संबोधित कर रहे थे, संघ के संस्थापक और आद्य सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार को संघ विचार का प्रथम स्रोत बताते हुए डॉ.भागवत ने कहा, कि अपनी स्थापना के समय से ही संघ का लक्ष्य व्यक्ति निर्माण के माध्यम से समाज का निर्माण हो जाएगा तो वह समाज अपने हित के सभी कार्य स्वयं करने में सक्षम होगा। संघ के स्वभाव और इसकी प्रवृत्ति के विषय में डॉ. भागवत ने कहा कि संघ की कार्यशैली विश्व में अनूठी है। इसकी किसी से तुलना नहीं हो सकती, यही कारण है कि, संघ कभी प्रचार के पीछे नहीं भागता। सभी विचारधारा के लोगों को संघ का मित्र बताते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि, डॉ. हेडगेवार के मित्रों में सावरकर से लेकर एम एन राय जैसे लोग तक शामिल थे। न उन्होंने किसी को पराया माना, न संघ किसी को पराया मानता है, संघ का मानना है कि, समाज को गुणवत्तापूर्ण बनाने के प्रयासों से ही देश को वैभवपूर्ण बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि व्यवस्था में परिष्कार तब होगा, जब समाज का परिष्कार होगा और समाज के परिष्कार के लिए व्यक्ति निर्माण ही एक उपाय है। उन्होंने कहा कि, संघ का उद्देश्य हर गांव, हर गली में ऐसे नायकों की कतार खड़ी करना है, जिनसे समाज प्रेरित महसूस कर सके, समाज में वांछित परिवर्तन ऊपर से नहीं लाया जा सकता। भेदरहित और समतामूलक समाज के निर्माण को संघ का दूसरा लक्ष्य बताते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि, हमारी विविधता के भी मर्म में हमारी एकात्मता ही है। विविधता के प्रति सम्मान ही भारत की शक्ति है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, एम एन राय, डॉ रवीन्द्र नाथ ठाकुर, डॉ वर्गीज कुरियन आदि अनेक महापुरुषों

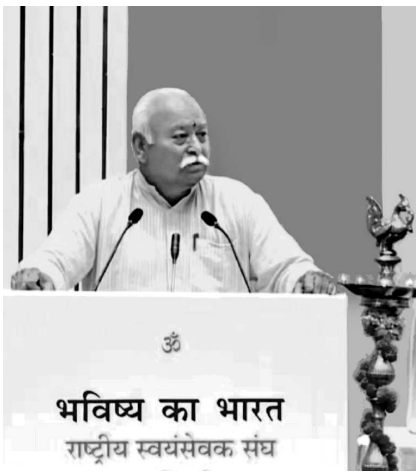

का उदाहरण देते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि, इस देश के समाज को अपने प्रति विश्वास जागृत करने की आवश्यकता है। यह विश्वास भारत की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं से ही जागृत हो सकता है। भारत के मूल तत्व की अनदेखी करके जो प्रयास किए गए उनकी विफलता स्वत: स्पष्ट है। डॉ. भागवत ने कहा कि, संघ और इसके कार्यक्रमों का विकास अपने कार्यकताओं की स्वयं की ऊर्जा और प्रेरणाओं से होता है, संघ की उसमें किसी प्रकार की भूमिका नहीं होती। आपदा और संकट की स्थिति में संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक देश के प्रत्येक नागरिक के साथ खड़ा है, यह संघ स्वभाव है। **भविष्य का भारत: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण** विषय पर आयोजित तीन दिनों की व्याख्यानमाला का पहला दिन था। संघ के सरसंघचालक के व्याख्यान से पूर्व विषय की प्रस्तावना रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र के संघचालक माननीय बजरंगलाल गुप्त ने कार्यक्रम की संकल्पना स्पष्ट की। विज्ञान भवन के सभागार में समाज के अलग-अलग क्षेत्र के अनेक ख्यातनाम विशिष्ट लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में कई देशों के राजदूत, लोकेश मुनि, कई केन्द्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, अर्जुन राम मेघवाल, विजय गोयल आदि उपस्थित थे। इनके साथ ही मेट्रो मैन ई श्रीधरन, फिल्म जगत की कई हस्तियां मनीषा कोइराला, मालिनी अवस्थी, अन्नु मलिक, अन्नु कपूर, मनोज तिवारी, नवाजुद्दीन सिद्दीकी भी उपस्थित थे।

हमारा संविधान इस प्राचीन राष्ट्र की साझा सहमति का दस्तावेज हैं

महिलाएं राष्ट्र के विकास में पुरुषों की बराबर की साझीदार और हिस्सेदार हैं।
देशभक्ति, पूर्वजों का गौरव और अपनी संस्कृति से प्रेम हिन्दुत्व की पहचान है।

— डॉ. मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने हिन्दुत्व की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कहा कि, हिन्दुत्व अर्थात् पावन जीवन मूल्यों का समुच्चय, यह इस देश का आधार और प्राण है। इसी के आधार पर समतायुक्त, शोषणमुक्त समाज का निर्माण संघ का लक्ष्य है। संघ का लक्ष्य हिन्दु राष्ट्र को परम वैभव की स्थिति में ले जाना है। संघ की दृष्टि में भारत का वह हर व्यक्ति हिन्दू है जो इस देश से प्रेम करता है। अपने पूर्वजों पर गर्व करता है और अपनी संस्कृति पर अभिमान करता है। भले ही वह इस संस्कृति को भारतीय कहता हो, आर्य कहता हो या सनातन कहता हो।

सरसंघचालक जी विज्ञान भवन में **भविष्य का भारत- संघ का दृष्टिकोण** विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला के दूसरे दिन प्रबुद्ध वर्ग को संबोधित कर रहे थे, उन्होंने संघ के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि एक सामर्थ्य शक्तिशाली संपन्न भारत विश्व के प्रत्येक कमजोर समाज का संबल होगा, यह सामर्थ्यशील होगा, साथ ही अनुशासन और एकात्मता से प्रेरित भी होगा।

डॉ. मोहनराव भागवत ने कहा कि, संघ का विचार हिन्दुत्व का विचार है। यह पुरातन विचार और सबका माना हुआ सर्वसम्मत विचार है, इसलिए हम अपने पुरखों के बताए मार्ग पर चल रहे हैं। अगर प्रश्न हो कि, हिन्दुत्व क्या है तो कहना पड़ेगा कि, सबके कल्याण में अपना कल्याण। ऐसा जीवन जीने का अनुशासन देने वाला हिन्दुत्व है और यह सभी विविधताओं को स्वीकार करता है।

राष्ट्र के उत्थान के लिए सामाजिक पूंजी की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए जापान का उदाहरण दिया और कहा कि संघ अनुशासित सामाजिक जीवन और समाजहित को सर्वोपरि मानता है। देश के लिए कोई भी साहस करने कोई भी त्याग करने और देश का हर काम उत्कृष्ट रूप से करने से ही एक शक्ति संपन्न राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। स्वयंसेवकों को केन्द्रित करते हुए उन्होंने कहा कि स्वयंसेवक समाज के लिए आवश्यक कार्यों को अपने हाथ में लेते हैं और अपनी क्षमता और इच्छानुसार विभिन्न क्षेत्र में काम करते है। संघ के साथ उनका परस्पर विचार-विमर्श होता है, लेकिन वे स्वावलंबी और स्वायत्त रूप से कार्य करते हैं।

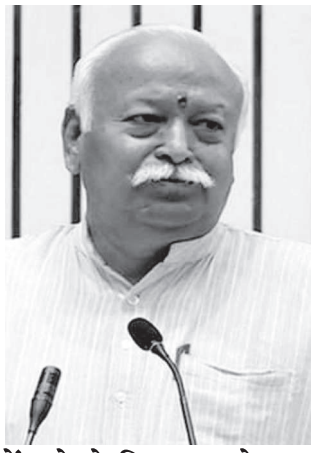

हिन्दू राष्ट्र के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि, संघ का काम बंधुभाव के लिए है और इस बंधुभाव के लिए एक ही आधार है विविधता में एकता, वह विचार देने वाला हमारा शाश्वत विचार दर्शन है, उसको दुनिया हिंदुत्व कहती है, इसलिए हम कहते हैं कि हमारा हिंदू राष्ट्र है इसका मतलब इसमें मुसलमान नहीं चाहिए ऐसा बिल्कुल नहीं होता। जिस दिन यह कहा जाएगा कि यहां मुसलमान नहीं चाहिए उस दिन वह हिंदुत्व नहीं रहेगा। वह तो विश्व कुटुंब की बात करता है।

संघ और राजनीति के संबंधों को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक ने कहा कि, संघ ने जन्म से ही निश्चित किया है कि, राजनीति से

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भविष्य का भारत - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण

तीन दिवसीय व्याख्यानमाला का अंतिम दिन, प्रश्नोत्तर सत्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने भारत के समाज में सामाजिक विषमता को बढ़ाने वाली सभी बातों का समूल नाश करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आरक्षण की व्यवस्था तब तक जारी रहने चाहिए जब तक इससे लाभन्वित होने वाला वर्ग स्वयं इसकी आवश्यकता से इंकार नहीं करता। अगर इसमें 100–150 वर्ष भी लगते हैं तो भी यह वांछनीय ही होगा। आरक्षण समस्या नहीं है, आरक्षण की राजनीति समस्या है।

सरसंघचालक दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिन से चल रही 'भविष्य का भारत – संघ का दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला के समापन सत्र में आमंत्रित विशिष्टजनों के प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। उन्होंने कहा कि संघ अंतरजातीय विवाह का पूर्ण समर्थन करता है। यह परिवारों और समाज की एकरसता को बढ़ाने वाली प्रक्रिया साबित होनी चाहिए। संघ से जुड़े परिवारों में अंतरजातीय विवाह बड़े पैमाने पर हुए हैं। राम जन्मभूमि से जुड़े प्रश्न पर कहा कि 'अयोध्या में रामजन्मभूमि पर एक भव्य मंदिर का निर्माण बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था। यदि हो गया तो 'हिंदू मुस्लिम एकता' को पुष्ट करेगा, यह काम सद्भावना से हुआ तो मुस्लिमों पर जो अंगुली उठती है, वह उठना बंद हो जाएगी।

देश की आंतरिक सुरक्षा से जुड़े एक प्रश्न पर उन्होंने कहा कि 'हंगामा पैदा करने वाले से तो सख्ती से निपटा जाना ही चाहिए। ऐसे लोगों के समर्थन में समाज से किसी को भी खड़ा नहीं होना चाहिए।' 'समाज की कमजोरी का लाभ कोई न उठा सके, इसकी चिंता की जानी चाहिए।'

मुस्लिमों के साथ संघ के संबंध में प्रश्न पर सरसंघचालक ने कहा कि 'संघ हर उस भारतवंशी को हिंदू मानता है जो अपनी मातृभूमि को, भारत की संस्कृति को और इसके पूर्वजों को अपना मानता है।'

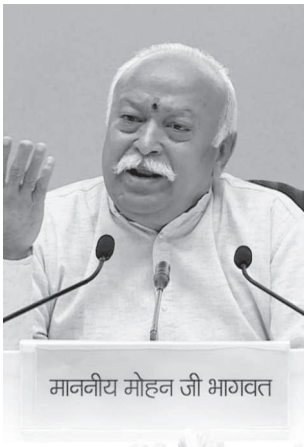
माननीय मोहन जी भागवत

एससी एसटी एक्ट से जुड़े सवालों पर डॉ. भागवत ने कहा कि एक वर्ग पर अत्याचार होता है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता, अत्याचार से संरक्षण के लिए कानून लागू होना चाहिए लेकिन, यह भी तय होना चाहिए कि कानून का दुरुपयोग न हो। वर्तमान स्थिति में कानून लागू नहीं भी हो रहा है और उसका दुरुपयोग भी हो रहा है। ऐसे में हमें सर्वश्रेष्ठ संभव विकल्प को चुनना चाहिए। तुलनात्मक रूप से जो भी बेहतर उपलब्ध विकल्प है उसे भी खारिज करेंगे तो इसका लाभ उपलब्ध बदतर विकल्प को मिलेगा। उन्होंने महाभारत का उदाहरण देते हुए कहा कि, कौरवों और पांडवों में से किसका साथ दिया जाए उसे लेकर यादवों में भी मतभेद थे, लेकिन भगवान कृष्ण ने स्पष्ट कहा कि हमें सर्वश्रेष्ठ संभव विकल्प का साथ देना चाहिए।

जनसंख्या नियंत्रण और जनसंख्यिकीय परिवर्तन के प्रश्न पर उन्होंने कहा 'एक समुचित और सुविचारित जनसंख्या नीति बनाई जानी चाहिए। जनसांख्यिकीय संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। साथ ही यह भी कहा कि जहां इसकी आवश्यकता ज्यादा है वहां इसे प्राथमिकता से लागू किया जाना चाहिए, लेकिन इसके लिए पहले लोगों का मन बनाने की जरूरत है। 'जिस भी वर्ग में जन्मदर की जो भी स्थिति है, उसके लिए समाज जिम्मेदार है।'

कन्वर्जन के संबंध में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में डॉ. भागवत ने कहा 'अगर सभी धर्म समान हैं तो फिर कन्वर्जन का औचित्य ही क्या है, विश्व में जहां भी

कन्वर्जन कराया जा रहा है उसका उद्देश्य बेहद संदिग्ध हैं। इसका विरोध होना चाहिए। लड़कियों और महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े प्रश्न पर उन्होंने कहा 'उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए सजग और सक्षम बनाना पड़ेगा, साथ ही समाज को महिलाओं को देखने की अपनी दृष्टि बदलनी पड़ेगी।'

अंत में उन्होंने संघ को लेकर भ्रम में रहने वाले हर किसी से आह्वान किया कि वह संघ को यदि समझना चाहते हैं तो पहले नजदीक से देखें इसके बाद अपना मत बनाएं। साथ ही उन्होंने आह्वान किया कि आप समाज के लिए जो भी संभव हो वह काम करें, लेकिन निष्क्रिय न रहें। राष्ट्र के स्वत्व को खड़ा करने में जो भी कर सकते हैं वह करें। उन्होंने कहा 'संकटों से जूझ रही दुनिया को आज एक तीसरा रास्ता चाहिए और वह दिशा देने की अंतर्निहित शक्ति केवल भारत के पास है।'

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूं सब को गुलाम
मैंने तो सदा सिखाया है करना अपने मन को गुलाम
गोपाल राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किया
कब दुनिया को हिन्दू करने घर घर में नरसंहार किया
कोई बतलाए काबुल में जाकर कितनी मस्जिद तोड़ी
भूभाग नहीं शत शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय
हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन रग रग हिन्दू मेरा परिचय।।

— अटल बिहारी वाजपेयी

(पृष्ठ २ का शेष)

में स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, कृषि, बागवानी, स्वच्छता एवं पोषण से संबंधित परियोजनाओं पर पूरे झारखंड में काम कर रही है। राज्य के 150 प्रखंडों में स्वच्छता, पर्यावरण एवं जनस्वास्थ्य पर सघन अभियान चला रही है। बोरा बांध के प्रयोग को कई राज्यों ने अपनाया है। ऐसे अन्य सफल प्रयोगों को देखने के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार अधिकारियों को समय-समय पर यहां भेजती रहती है। केंद्र सरकार के कई मंत्री भी इन कामों को नजदीक से देख चुके हैं।

कभी उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश संगठन मंत्री रहे अशोक भगत आज भारत सरकार में खादी ग्रामोद्योग आयोग, मिड्डे मील, स्किल डेवलपमेंट, कपार्ट आदि कार्यक्रमों के सदस्य हैं।

(साभार : संजय कुमार, रांची)

(पृष्ठ ४ का शेष)

हमारा संगठन दूर रहेगा। संघ का कोई भी पदाधिकारी किसी भी राजनीतिक दल में पदाधिकारी नहीं बनेगा। संघ का काम संपूर्ण समाज को जोड़ना है। राज कौन करे इसका चुनाव जनता करती है। किंतु राष्ट्र हित में राज्य कैसा चले इसके बारे में हमारा मत है और इसके लिए हम लोकतांत्रिक रीति से प्रयास भी करते हैं। संघ राजनीति से दूर रहता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि, संघ घुसपैठियों के बारे में न बोले। इस तरह के प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न हैं। राजनीति की उसमें प्रमुख भूमिका है। परंतु प्रश्नों के सुलझने और न सुलझने का परिणाम पूरे देश पर होता है इसलिए ऐसे विषयों पर संघ सदैव से अपना मत रखता आया है। कुछ लोग बोलते हैं कि, दूसरे दलों में स्वयंसेवक ज्यादा क्यों नहीं हैं? यह हमारा प्रश्न नहीं है। दूसरे दलों में जाने की उनकी इच्छा क्यों नहीं होती है, यह उनको विचार करना हैं। हम किसी भी स्वयंसेवक को किसी विशेष दल में कार्य करने को नहीं कहते।

उन्होंने महिलाओं को केन्द्रित करते हुए कहा कि, हमारी संस्कृति में महिलाओं को देवी माना गया है। लेकिन असल में उनकी हालत देखते हैं तो ठीक नहीं दिखायी देती। हमारा मानना है कि, समाज का एक हिस्सा होने के नाते महिलाएं समाज जीवन के सभी प्रयासों में बराबरी की हिस्सेदार हैं और जिम्मेदार भी। इसलिए उनके साथ समान व्यवहार होना चाहिए, आज कई क्षेत्रों में महिलाएं पुरुषों से अच्छा काम कर रहीं हैं, इसलिए महिला और पुरुष परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं।

संघ ने दी वैचारिक चुनौती भाग खड़े हुए संघ विरोधी

फाजिल्का (पंजाब) की शाखा में गए थे दिल्ली के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय संवाद-सम्मेलन में आमंत्रित किए जाने के बावजूद भी संघ विरोधियों ने दूरी बनाए रखी। इतना ही नहीं, इन लोगों ने राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रनीति को सुनने और सहमत होने से भी इन्कार कर दिया। प्राय: सभी टी.वी. चैनलों पर भाजपा विराधी दलों के प्रवक्ताओं ने जिस तरह से संघ के राष्ट्रनीति से सम्बन्धित और व्यवहार की खिल्ली उड़ाई उससे संघ का तो कुछ नहीं बिगड़ा उल्टा सता के भूखे इन राजनीतिक दलों की अपनी ही औकात का पर्दाफाश हो गया। यह भी साफ हो गया कि संघ और हिन्दुत्व के विरोधी राष्ट्रहित में भी अपने राजनीतिक स्वार्थ को छोड़ नहीं सकते। इनका लक्ष्य राष्ट्र-निर्माण नहीं सता-निर्माण है।

जब सूर्य उदय होता है तो सभी प्राणी अपने-अपने संस्कारों के अनुसार व्यवहार करने लगते हैं। स्वास्थ्य प्रेमी कुछ लोग सूर्य नमस्कार करके अपने भीतर शक्ति के संचार की कामना करते हैं। कुछ लोग आरती उतार कर अपने भविष्य के लिए मंगल कामना करते हैं। अनेक लोग सूर्य को अर्घ्य देकर अपनी आध्यत्मिक क्षमता को बढ़ाते हैं। परन्तु ऐसे भी प्राणी भगवान ने बनाए हैं जो चढ़ते सूर्य को देखकर भौंकने लग जाते हैं। संघ के इस कार्यक्रम के दौरान कुछ इसी तरह का ही दृश्य दिखाई दिया। अधिकांश लोगों ने संघ की सर्वस्पर्शी, सार्वभौमिक एवं सार्वग्राह्यीय विचारधारा एवं वक्त के अनुसार कार्य पद्धति को बदलने के सामर्थ्य की प्रशंसा की। परन्तु पेशे से राजनीतिक व्यापारियों ने अपने दल के संस्कारों में ही रहते हुए अपना संघ विरोधी कारोबार जारी रखा। यह संघ का नहीं उनका अपना ही दुर्भाग्य है। इनके भाग्य में राष्ट्रनीति एवं राष्ट्रहित की रेखाएं ही नहीं हैं।

संघ द्वारा सम्पन्न इस कार्यक्रम में सरसंघचालक महोदय ने 135 प्रश्नों के उत्तर दिए। पिछले 93 वर्षों से संघ पर लग रहे सभी आरोपों के बहुत स्पष्ट और तथ्यपरक उत्तर दिए गए। हिन्दुत्व, राष्ट्रवाद, आरक्षण, गोरक्षा, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, समाज सेवा, राष्ट्ररक्षा, धर्म परिवर्तन, धारा-370, अंतर्जातीय विवाह और अल्पसंख्यक जैसे विषयों पर सरसंघचालक जी ने दृढ़ता और स्पष्टवादिता के साथ अपने विचार रखे। समाज के अनेक वर्गों के प्रतिनिधियों ने संघ की इस राष्ट्रनीति का स्वागत किया परन्तु जिनके दिमागों में निम्न राजनीति और सत्ता के लोभ का कचरा भरा हुआ है उन्हें कुछ भी समझ नहीं आया। कानों में उंगलियां डालकर राजनीति कर रहे इन दलों की आंखों में भी मोतियाबिंद हो गया लगता है जो सामने दीवार पर लिखा हुआ पढ़ भी नहीं सकते।

उल्लेखनीय है कि संघ के आद्यसरसंघचालक डॉक्टर हेडगेवार से लेकर वर्तमान सरसंघचालक डॉक्टर मोहन भागवत तक इस तरह के संवाद और परस्पर मिलन की पद्धति निरंतर जारी है। ऐसे अनेक महापुरुषों की जानकारी सबको है, परन्तु मैं तीन ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों की जानकारी देता हूं जिसे पढ़कर संघ विरोधियों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।

भारत में साम्यवादी दल की स्थापना करने वाले दो प्रमुख नेता थे मानवेन्द्रनाथ रॉय और श्रीपाद अमृत डांगे। जनसंघ के तत्कालीन महामंत्री पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कॉमरेड मानवेन्द्रनाथ राय से सम्पर्क साधा, उन्हें पढ़ने के लिए हिन्दुत्व आधारित साहित्य दिया और कई कार्यक्रमों में उनको साथ लेकर आए। राय साहब ने इस विचारधारा से प्रभावित होकर 'सांइंटिफिक ह्यूमिनिज्म' नामक पुस्तक लिखी और कालांतर में दीनदयाल जी द्वारा रचित ''एकात्म मानववाद'' के साथ पूर्ण सहमति जताई।

इसी तरह कॉमरेड अमृत डांगे के साथ भारतीय

मजदूर संघ के संस्थापक दत्तोपंत ठेंगड़ी ने सम्पर्क बनाया, संवाद किया, अपने कार्यक्रम दिखाए और साहित्य पढ़ने को दिया। सभी जानते हैं कि श्रीपाद अमृत डांगे हिन्दुत्व की विचारधारा से सहमत हुए।

1975 में देश में थोपी गई इमरजेंसी समाप्त होने के बाद मेरी (इस लेख के लेखक) की नियुक्ति पंजाब के फिरोजपुर विभाग में विभाग प्रचारक के रूप में हुई। 1978 में पंजाब के एक शहर फाजिल्का में संघ की शाखा में दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी को आने का निमंत्रण दिया गया। वे उन दिनों में फाजिल्का में अपने किसी धार्मिक कार्यक्रम के निमित्त आए हुए थे। इमाम साहब ने इस निमंत्रण को स्वीकार किया। वे फाजिल्का शाखा के नगर एकत्रीकरण में आए। उन्होंने स्वयंसेवकों के साथ बाकायदा भगवा ध्वज को प्रणाम किया और संघ अधिकारी के भाषण को ध्यानपूर्वक सुना। अंत में वे स्वयंसेवकों के साथ ही प्रणाम की स्थिति में खड़े होकर संघ प्रार्थना में भी शामिल हुए। कार्यक्रम के बाद सामूहिक जलपान को देखकर उन्होंने संघ के कार्यकर्ताओं में व्याप्त सामाजिक समरसता और सेवाभावी चरित्र की जमकर प्रशंसा की।

उपरोक्त उदाहरणों में स्पष्ट होता है कि संघ की कार्यपद्धति में संवाद एवं परिचर्चा का विशेष महत्व है। दिल्ली में आयोजित संवाद सम्मेलन में संघ विरोधी नहीं आए। इसके कई कारण हैं। आज विपक्ष में ऐसा कोई भी नेता नहीं है जो संघ की शक्ति को देखने, सुनने और समझने का सामर्थ्य रखता हो। एक भी ऐसा नेता नहीं है जो महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, सुभाषचंद्र बोस, डॉ. अम्बेडकर, वीर सावरकर, जनरल करियप्पा और पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की श्रेणी में आ सकने के काबिल हो।

इस कार्यक्रम का विषय था भविष्य का भारत। आज एक भी ऐसा विपक्षी नेता नजर नहीं आता जिसे भविष्य के भारत की चिंता हो। जिन लोगों को अपने राजनीतिक भविष्य की चिंता सता रही हो उन्हें भविष्य के भारत से क्या लेना देना। संघ भारत की विविधता में एकता को खोजता है, जबकि संघ विरोधी इस विविधता में विघटन की तलाश करते हैं। संघ की कार्य शैली लोकतांत्रिक है जबकि संघ विरोधियों में परिवार, जाति, मजहब, क्षेत्र का ही बोलबाला रहता है।

यह जानते हुए भी कि देश में संघ विरोधियों का जमघट है, इस कार्यक्रम के मंच से संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने बड़े सहज भाव से कहा कि संघ का कोई विरोधी नहीं है और न ही हम किसी को अपना विरोधी मानते हैं। सभी अपने हैं। समन्वय के इसी धरातल पर भविष्य के राष्ट्र को उज्ज्वल और परम वैभवशाली बनाया जा सकता है।

(**नरेन्द्र सहगल**, पूर्व संघ प्रचारक, वरिष्ठ पत्रकार एवं राष्ट्रवादी लेखक)

आमने-सामने

ये तो हद हो गई

एनआरसी राजनीतिक उद्देश्यों से किया जा रहा है। हम ऐसा नहीं होने देंगे। भाजपा लोगों को बांटने का प्रयास कर रही है। इस स्थिति को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। देश में गृह युद्ध, रक्तपात हो जाएगा।

— **ममता बनर्जी,** मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल

ये तो हद ही हो गई। विदेशी घुसपैठियों के लिए ममता कह रही हैं कि गृहयुद्ध होगा, रक्त बहेगा। विदेशी घुसपैठियों के लिए हिन्दुस्थानियों का रक्त बहेगा ? एक मुख्यमंत्री विदेशी घुसपैठियों के लिए अपनी जनता का रक्त बहाएंगी।

— **गिरिराज सिंह,** केन्द्रीय मंत्री

पश्चिम बंगाल में लोकतंत्र और मानवता की हत्या

राजनीतिक-वैचारिक स्वार्थ छोड़ कर, लोकतंत्र की रक्षा करें

— लोकेन्द्र सिंह

पश्चिम बंगाल में खूनी राजनीति के शिकंजे में फंसे लोकतंत्र का दम घुंट रहा है और वह सिसकियां ले रहा है। पंचायत चुनावों में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने जिस प्रकार हिंसा का नंगा नाच किया था, उससे ही साफ जाहिर हो गया था कि बंगाल की राजनीति के मुंह खून लग गया है। पुरुलिया जिले में तीन दिन के भीतर दो दलित युवकों की जिस प्रकार हत्या की गई है, उसने बंगाल की भयावह तस्वीर को देश के सामने प्रस्तुत किया है। जिसने भी भाजपा के दलित कार्यकर्ता त्रिलोचन महतो और दुलाल कुमार की हत्या की है, उसने लोकतंत्र के साथ-साथ मानवता को भी फांसी पर लटकाया है। यह जंगलराज ही है, जहाँ एक युवक की बर्बरता से सिर्फ इसलिए हत्या कर दी जाती है, क्योंकि वह भारतीय जनता पार्टी के लिए काम करता था। यह जंगलराज ही है, जहाँ त्रिलोचन महतो के शव को पेड़ से लटका कर प्रदेश की जनता को एक संदेश दिया कि भाजपा के लिए काम करोगे तो यही अंजाम होगा। त्रिलोचन की पीठ पर हत्यारों ने बांग्ला भाषा में यह संदेश लिखा था। उसकी जेब में पत्र भी रखा, जिसमें लिखा था- यह शख्स पिछलें 18 सालों से भाजपा के लिए काम कर रहा है, पंचायत चुनाव के बाद से ही तुमको मारने की योजना बनाई जा रही थी लेकिन बार-बार बच कर निकल रहे थे। अब तुम मर चुके हो, भाजपा के लिए काम करने वालों का यही अंजाम होगा। सोचिए, हम कहाँ जा रहे हैं ? इस खूनी राजनीति से हमें क्या हासिल होगा ? इस संबंध में भी विचार कीजिए कि बंगाल की राजनीति को यह रूप कब और कैसे मिला ? इसका समाधान क्या है, इस संबंध में भी चिंतन की आवश्यकता है।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस की सर्वेसर्वी ममता बनर्जी देश में कहीं भी होने वाली मारपीट की घटना पर भी मुखर हो उठती हैं। उन्हें लोकतंत्र खतरे में दिखाई देता है, किंतु अपने ही राज्य में बर्बरता पर वह चुप्पी साध कर बैठी हुई हैं। ममता बनर्जी ही क्यों, देश का वह सेक्युलर तबका भी मुंह में दही जमा कर बैठा हैं, जिसने अवार्ड वापसी और कथित असहिष्णुता के नाम पर भारत को विदेशों में भी बदनाम किया था। निश्चित ही देश के किसी भी हिस्से में, किसी भी जाति और पंथ के व्यक्ति के साथ मारपीट या उसकी हत्या, घोर निंदनीय है। इस प्रकार की घटनाओं पर प्रबुद्ध वर्ग को मुखर होकर सत्ता पर दबाव बनाना चाहिए ताकि, मानवता के हत्यारे जेल की सलाखों के पीछे हों या फिर अपने अंजाम को प्राप्त हों। किंतु, देखने में आता है कि यह कथित प्रबुद्ध वर्ग भाजपा शासित राज्यों में होने वाली दलित उत्पीड़न की घटनाओं पर ही आक्रोशित होता है। तब यह वर्ग लोकतंत्र, सहिष्णुता और पंथनिरपेक्षता खतरे में का परचम लहराते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ तक दौड़ लगा देता है। बंगाल में दो दलित नौजवानों की क्रूरता से हत्या की गई और उसके बाद संपूर्ण पशुता को प्रकट किया गया, किंतु अभी तक उन महानुभावों में से किसी ने न तो अवार्ड वापस किए, न धरना-प्रदर्शन किया और न ही किसी समाचार-पत्र में संपादकीय ही लिखा। कथित प्रबुद्ध वर्ग के इस दोगले आचरण से समाज चिंतित है। पत्रकारों, लेखकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रति उसका अविश्वास गहराता जा रहा है। उन नेताओं ने भी अब तक एक शब्द नहीं बोला है, जो अपना राज्य छोड़कर हैदराबाद और उत्तरप्रदेश तक दौरे करते नजर आ रहे थे। दलित चिंतक का होर्डिंग टांगकर अपनी दुकान चलाने वालों ने भी बंगाल में तीन दिन में दो दलित युवकों की मौत पर किसी प्रकार की चिंता प्रकट नहीं की है। इन सबका व्यवहार देख कर तो यही लग रहा है कि मानों भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता दलित होकर भी दलित नहीं होता है। भाजपा के दलित की हत्या मानों इनके मन

की मुराद पूरी होने जैसा है। मानों यह चाहते हों कि हत्यारों का संदेश समाज में गहरे तक जाना चाहिए कि भाजपा के लिए काम करने पर यही अंजाम होगा, इसलिए भाजपा से दूरी रखें।

यह विचार करने की जरूरत है कि, ममता बनर्जी के राज्य में हत्या की राजनीति की परंपरा कहाँ से आई? बंगाल के लोगों ने इसी प्रकार के जंगलराज से त्रस्त होकर ही तो ममता दीदी को सत्ता सौंपी थी। इस उम्मीद के साथ कि दीदी बदलाव लाएंगी। हिंसक राजनीति पर पानी डालेंगी। राज्य में शांति और सह-अस्तित्व का वातावरण बनाएंगी। नये बंगाल का निर्माण करेंगी। उसे विकास के पथ पर आगे बढाएंगी। बंगाल में जिस प्रकार विरोधी को कुचलने की राजनीति दिखाई दे रही है, वैसा दो ही प्रकार की शासन व्यवस्था में होता है- तानाशाही और साम्यवादी शासन में। इन दोनों शासन व्यवस्था में अपने साम्यवादी शासन व्यवस्था की क्रुरताओं और रक्तरंजित तौर-तरीकों से सने हुए हैं। पश्चिम बंगाल स्वयं की इसका प्रत्यक्ष गवाह है। यहाँ लंबे समय तक कम्युनिस्टों का शासन रहा। अपने राजनीतिक विरोधियों को मिला देने का यह तरीका माकपा के शासन काल में बहुत उपयोग आता रहा है। किसी की हत्या करना और उसे पेड़ या खंबे पर लटका देना एवं पोस्टर के माध्यम से जनता में भय उत्पन्न करना प्रचलित कम्युनिस्ट तरीका है। माओवादी-नक्सली भी इसी प्रकार लोगों की हत्याएं करते हैं। यह लोगों में भय उत्पन्न करते हैं ताकि उनके समक्ष कोई अन्य विचार उठकर खड़ा होने का साहस नहीं कर सके। किंतु, कायरों ने इतिहास से कभी सबक नहीं लिया कि सच उस साहस का नाम है, जिसको किसी भी प्रकार से दबाया नहीं जा सकता। उसे भयाक्रांत नहीं किया जा सकता। कम्युनिस्ट शासन काल में पश्चिम बंगाल विरोधियों को ठिकाने लगाने की प्रयोगशाला बन गया था। बंगाल में विरोधियों का नामोनिशान मिटाने के लिए वह तमाम प्रयोग किए जाते थे, जो स्टालिन और लेनिन ने स्थापित किए थे। पश्चिम बंगाल के पूर्व कम्यूनिस्ट मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने विधानसभा में एक प्रश्न के उत्तर में यह स्वीकार किया था कि कम्युनिस्ट शासन के लगभग तीस साल के कार्यकाल में राज्य में लगभग 28 हजार लोगों की राजनीतिक हत्याएं हुई। भारत में पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और केरल राजनीतिक हिंसा के लिए कुख्यात हैं। इन तीनों ही जगह कम्युनिस्ट पार्टी का शासन रहा है, केरल में तो फिर से लौट आया है। सत्ता में लौटने के साथ ही ईश्वर के घर में कामरेडों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के कार्यकर्ताओं की हत्या प्रारंभ भी कर दी।

अब विचार करते हैं कि पश्चिम बंगाल में माकपा के जंगलराज के साथ ही खूनी राजनीति की यह प्रवृत्ति समाप्त क्यों नहीं हुई। माकपा की हिंसक राजनीति का स्वयं शिकार रहीं ममता बनर्जी के शासन काल में भी यह घृणित राजनीति बदस्तूर जारी क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर बहुत स्पष्ट है। बस यह देखने की आवश्यकता हैं कि तृणमूल कांग्रेस का काडर कहाँ से आया है? तृणमूल कांग्रेस के काडर में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है, जो माकपा से आए हैं। सत्ता परिवर्तन के साथ ही माकपा का काडर तृणमूल कांग्रेस में चला आया। यही कारण है कि पश्चिम बंगाल में अब भी वही हो रहा है, जो माकपा के समय में होता रहा है। जो सहमत नहीं, उसे समाप्त करने की राजनीति। सत्ता परिवर्तन तो हुआ, किंतु व्यवस्था परिवर्तन नहीं। बैलेट से अधिक बुलेट में भरोसा करने वाला काडर अब भी बंगाल में हावी है। भाजपा की बढ़ती स्वीकार्यता से सत्ता खोने का डर उसके मन में बैंठ गया है। इसलिए यह काडर अपने परंपरागत अलोकतांत्रिक, तानाशाही और क्रूर साम्यवादी तरीकों से जनता को भयाक्रांत करने की असफल कोशिश कर रहा है ताकि भाजपा बंगाल में जगह न बना सके।

बहरहाल, आवश्यक है कि हम अपने निहित राजनीतिक और वैचारिक स्वार्थ को छोड़ कर ऐसी परिस्थितियों में मुखर होकर बर्बरता का विरोध करें। लोकतंत्र की निर्ममता से हत्या कर दी जाए, उससे पहले ही समय रहते हमें उसकी रक्षा करनी ही होगी।

(लेखक विश्व संवाद केंद्र, भोपाल के कार्यकारी निदेशक हैं।)

स्वामी विवेकानंद ने विश्वबंधुत्व का विचार सबके सम्मुख रखा था

— डॉ. मनमोहन वैद्य, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना '**मुस्लिम ब्रदरहुड**' के साथ करने पर संघ से परिचित और राष्ट्रीय विचार के लोगों को आश्चर्य होना स्वाभाविक है।

भारत के वामपंथी, माओवाद और क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ के लिए राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ खड़े तत्वों को इससे आनंद होना भी अस्वाभाविक नहीं है।

वैसे, इसका अर्थ ये नहीं कि राहुल गांधी जिहादी मुस्लिम आतंकवाद की वैश्विक त्रासदी से अनजान हैं, ऐसा भी नहीं है कि वे समाजहित में चलने वाले संघ के कार्यों तथा समाज से संघ को सतत मिलते सहयोग और लगातार बढ़ते समर्थन के बारे में नहीं जानते, फिर भी वे ऐसा क्यों कह रहे हैं?

कारण –उनके राजनीतिक सलाहकार उन्हें यह बताने में सफल रहे हैं कि संघ की बुराई करने से, संघ के खिलाफ बोलने से उन्हें राजनीतिक फायदा हो सकता है।

इसलिए नाटकीय आवेश के साथ आरोप करना उन्हें सिखाया गया है। आरोपों को साबित करने की जिम्मेदारी उनकी नहीं है, किसी एक आरोप पर एक स्वयंसेवक ने उन्हें न्यायालय में चुनौती दी तो आरोप साबित करने के स्थान पर वे न्यायालय में आने से ही कतरा रहे थे।

वास्तव में संघ भारत की परम्परागत अध्यात्म आधारित सर्वांगीण और एकात्म जीवनदृष्टि के आधार पर सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य कर रहा है। इस सर्वसमावेशक जीवन दृष्टि की तुलना जिहादी 'मुस्लिम ब्रदरहुड' से करना समस्त भारतीयों का, देश की महान संस्कृति का घोर अपमान है। वास्तव में जिहादी मुस्लिम मानसिकता और उनके कारनामों को देखा जाए तो उसके साथ 'ब्रदरहुड' शब्द ही बेमेल लगता है। इनका यह तथाकथित ''मुस्लिम ब्रदरहुड'' सलाफी सुन्नी मुसलमानों के अलावा अन्य मुसलमानों को भी अपने ''ब्रदरहुड'' में स्वीकार नहीं करता, इतना ही नहीं, उन्हें मुसलमान मानने से ही इंकार करता है।

11 सितम्बर को **स्वामी विवेकानंद** के विश्व विख्यात शिकागो व्याख्यान को 125 वर्ष हो रहे हैं। उन्होंने भारत के सर्वसमावेशी एकात्म और सर्वांगीण जीवन दृष्टि के आधार पर विश्वबंधुत्व का विचार सबके सम्मुख रखा था। यह केवल बौद्धिक प्रतिपादन नहीं था। वे अपने हृदय के भाव बोल रहे थे। शिकागों में अपने ऐतिहासिक संबोधन में स्वामी विवेकानंद ने उद्‌बोधन की शुरुआत ही '**मेरे अमेरिकन बहनों और भाईयों**' से की थी। जिसे सुन कर पूर्ण सभागार अचंभित और उत्तेजित हो उठा और कई मिनटों तक खड़े होकर सभी की तालियों की ध्वनि से सारा सभागृह गूँज उठा था।

भाषण में उन्होंने कहा था – ''मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मान कर स्वीकार करते हैं, मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त

धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट को स्थान दिया था, जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसमें महान् जरथुस्त्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है।''

आगे वे कहते हैं—

''साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है। उसको बारम्बार मानवों के रक्त से नहलाती रही है, सभ्यताओं का विध्वंस करती और पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही है। यदि ये वीभत्स दानवता न होती तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता।''

डॉ. आम्बेडकर ने ''थॉट्स ऑन पाकिस्तान'' में स्पष्ट कहा है –''इस्लाम यह एक बंद समुदाय है (closed corporation) और वह मुसलमान और गैर-मुसलमान के बीच जो भेद करते हैं वह वास्तविक है।''''इस्लामिक ब्रदरहुड'' यह समस्त मानवजाति का समावेश करने वाला 'विश्वबंधुत्व' नहीं है। यह मुसलमानों का मुसलमानों के लिए ही 'बंधुत्व' है, वहाँ बंधुत्व है, पर उसका लाभ उनके समुदाय तक ही सीमित है, जो बाहर है, उनके लिए तुच्छता (contempt) और शत्रुता के सिवाय और कुछ भी नहीं है,''

मुस्लिम ब्रदरहुड सर्वत्र शरिया का राज्य लाना चाहता है। संघ हिन्दू राष्ट्र की बात करता है जो सभी को स्वीकार करते हुए स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित 'विश्वबंधुत्व' (युनिवर्सल ब्रदरहुड) का प्रसार करता है।

सोचिये, जिहादी कट्टर ''मुस्लिम ब्रदरहुड'' की तुलना स्वामी विवेकानंद के विश्वबंधुत्व (Universal brotherhood) के साथ कैसे हो सकती है ? ऐसे महान विचारों को लेकर चलने वाले सम्पूर्ण समाज का संगठन करने की सोच रखने वाले संघ के बारे में राहुल गांधी बार बार ऐसा वैमनस्य पूर्ण विचार क्यों रखते होंगे?

एक ज्येष्ठ स्तम्भ लेखक ने 2 वर्ष पूर्व कांग्रेस का वर्णन ऐसा किया कि ''यह कांग्रेस पार्टी किसी भी हद तक जाकर सत्ता में आने का प्रयास करती है और पार्टी की बौद्धिक गतिविधि उन्होंने कम्युनिस्टों को (outsourced) सौंप दी है।''

कांग्रेस की बौद्धिक गतिविधि जब से कामरेडों ने संभाल ली है, तब से पार्टी ऐसी असहिष्णुता का परिचय देते हुए राष्ट्रीय विचारों का घोर विरोध करने लगी है।

स्वतंत्रता के पूर्व कांग्रेस एक खुले मंच के समान थी। उसमें हिंदू महासभा, क्रांतिकारियों के समर्थक, नरम, गरम आदि सभी प्रकार के लोगों का समावेश था।

क्रमशः इसमें राजनीतिक दल का स्वरूप आने लगा और असहमति रखने वाले लोगों को दरकिनार किया जाने लगा। स्वतंत्रता के बाद भी विभिन्न विचार प्रवाह के लोग कांग्रेस में थे। पंडित नेहरू संघ का घोर विरोध करते थे। तो सरदार पटेल जैसे नेता संघ को कांग्रेस में शामिल होने का निमंत्रण दे रहे थे, सन् 1962 के चीन के आक्रमण के समय संघ के स्वयंसेवकों ने जान की बाजी लगाकर सेवा की, जो सहायता की, उससे प्रभावित होकर पंडित नेहरू ने 1963 के गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने के लिए संघ स्वयंसेवकों को निमंत्रित किया था और तत्काल सूचना मिलने पर भी 3000 स्वयंसेवक उस परेड में शामिल हुए थे।

सन् 1965 में पाकिस्तान के आक्रमण के समय देश के प्रमुख नेताओं की आपात बैठक प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने बुलाई। इसमें सरसंघचालक श्रीगुरुजी को बुलाया गया था और उनकी तुरंत दिल्ली पहुँचने की व्यवस्था भी सरकार ने की थी। इस बैठक में एक कम्युनिस्ट नेता द्वारा शास्त्री जी से बार-बार ''आपकी

सेना क्या कर रही थी?'' पूछने पर श्रीगुरुजी ने कहा – ''ये आपकी सेना, आपकी सेना क्या कहे जा रहे हो? हमारी सेना कहो, आप क्या किसी दूसरे देश के हो?''

राजनीति को राजनीति की जगह पर रखते हुए आपसी संवाद की ऐसी परम्परा 1970 के दशक तक चलती रही। फिर क्रमशः वामपंथी विचारों का प्रभाव कांग्रेस में बढ़ने लगा, शत्रुतापूर्ण भाषा और असहिष्णुता झलकने लगी। भाजपा को छोड़कर अधिकतर राजनैतिक दलों के बौद्धिक-वैचारिक प्रकोष्ठ में इन वामपंथियों का प्रभाव या वर्चस्व कम अधिक मात्रा में है, ऐसा दिखता है। इसलिए, अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए राष्ट्रीय विचारों का हर संभव विरोध और वामपंथी विचारों से प्रेरित समाज विखंडन के प्रयासों को इनके द्वारा समर्थन होता दिखता है। गत कुछ वर्षों से अपने देश के प्रमुख विपक्ष कांग्रेस की स्थिति ऐसी विचित्र हो गई है कि लगता है जो बौद्धिक गतिविधि कम्युनिस्टों को outsource कर दी थी। उसके स्थान पर कांग्रेस के शरीर में माओवादी आत्मा का ही प्रवेश हो चुका है। ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि कांग्रेस अध्यक्ष के इस अपमानजनक वक्तव्य के समर्थन में जितने लेखकों के लेख प्रकाशित हुए हैं, उनके तार भी माओवादी या वामपंथी विचारों से जुड़े दिखते हैं।

क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि माओवाद प्रेरित जितने भी आंदोलन हुए, उन्हें कांग्रेस ने भरकस खुला समर्थन दिया है। 'भारत तेरे टुकड़े होंगे- इंशा अल्लाह, इंशा अल्लाह अथवा भारत की बर्बादी तक जंग रहेगी जारी जैसे नारे या भारतीय संसद पर आतंकी हमला करने वाले अफजल गुरु (जिसकी सजा यूपीए शासन के दौरान ही घोषित हुई थी) के समर्थन में **अफजल हम शर्मिंदा हैं तेरे कातिल जिंदा हैं** जैसे नारे लगाने वालों का खुला समर्थन कांग्रेस के नेताओं ने किया है। समाज में जातीय विद्वेष भड़काकर संविधान की धज्जियाँ उड़ाते हुए की गयी हिंसा का समर्थन, बिना किसी के भड़काए (unprovoked) सार्वजनिक और निजी संपत्ति ध्वस्त करने वालों का समर्थन, जब कांग्रेस पार्टी करती है, तब इस पार्टी के शरीर पर कब्जा कर बैठी माओवादी आत्मा का स्पष्ट परिचय होता है।

अर्बन माओवादी किस-किस रूप में समाज में व्याप्त हुए हैं और कैसे प्रतिष्ठित हो गए है। ये अभी की कुछ घटनाओं से जनता के सामने आ गया है। ऐसी देश विघातक ताकतों को कांग्रेस का समर्थन देख कर आश्चर्य कम और दुःख अधिक होता है। वैचारिक मतभेद होने के बावजूद देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल कांग्रेस की ऐसी भाषा पहले कभी नहीं थी जैसी आज कांग्रेस बोल रही है। भारत का सबसे पुराना, स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करने वाला, सारे भारत में जिसका समर्थक है, ऐसा प्रमुख राष्ट्रीय दल अराष्ट्रीय तत्त्वों के साथ खड़ा देखकर चिंता भी होती है। शायद जनता भी यह बात समझ रही है, इसीलिए कांग्रेस धीरे-धीरे अपना जनाधार खो रही है।

125 वर्ष पहले **स्वामी विवेकानंद** ने समुद्र पार जा कर भारत की इस सनातन सर्वसमावेशी संस्कृति की विजय पताका फहराई। आज उसी देश का एक नेता समुद्र पार जा कर इसी भारतीय संस्कृति की तुलना ''इस्लामिक ब्रदरहुड'' से कर विवेकानंद का, इस भारत की महान संस्कृति का और भारत का अपमान कर रहा है।

लोकतंत्र में विभिन्न दलों में मतभेद तो हो सकते हैं पर राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर अपनी राजनीतिक पहचान से भी ऊपर उठ कर एक होने से ही राष्ट्र प्रगति करेगा तथा अंतर्गत और बाह्य संकटों पर मात कर अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढ सकेगा।

निर्णय जल्द आने की उम्मीद : आरएसएस

श्रीराम जन्मभूमि के मुकदमें में
सर्वोच्च न्यायालय की तीन सदस्य पीठ
द्वारा 29 अक्टूबर से सुनवाई
के निर्णय का हम स्वागत करते हैं।
हमें विश्वास है कि जल्द मुकदमे का
न्यायोचित निर्णय होगा।
— **अरुण कुमार**, अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख

पाठक सम्मेलन में हुआ डाकियों का सम्मान

कुनकरी। छत्तीसगढ़ प्रान्त के ग्रामीण क्षेत्र में सुदूर ग्राम-ग्राम में पहुँचने वाली जागरण पत्रिका **''शाश्वत राष्ट्रबोध''** के पाठक सम्मेलन में दो डाकियों का सम्मान किया गया।

जशपुर जिले में स्थित कुनकुरी विकासखण्ड के ग्राम कोरवबहरी में गत 22 सितम्बर शनिवार को खण्ड का पाठक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें 46 पुरुष और 45 महिला, कुल 91 पाठक उपस्थित हुए। इस पाठक सम्मेलन में डाक घर में कार्यरत डाकिया श्री पोस नारायण जी और सेवानिवृत्त डाकिया श्री लुदु साय जी का श्रीफल व पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया गया। इस पाठक सम्मेलन में रायगढ़ विभाग के विभाग प्रचार प्रमुख राजेश अम्बस्थ जी ने जागरण पत्रिका का उद्देश्य और पाठक सम्मेलन के महत्व को समझाया। जागरण पत्रिका के खण्ड प्रमुख नन्दकिशोर चक्रेश ने सम्मेलन की भूमिका रखी। इसमें कुनकुरी खण्ड के सह खण्ड कार्यवाह गोविंद यादव, खण्ड संपर्क प्रमुख अशोक चौहान, कलीबा मंडल कार्यवाह दिनेश यादव, कलीबा ग्राम के रामा नायक आदि ने सम्मेलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर खण्ड के पाठकों की सूची को भी अद्यतन किया गया।

मीठी नीम से घरेलू उपचार

मीठी नीम की पत्तियों से आप अपनी आँखों का उपचार कर सकते हैं। मीठी नीम में वह सारे औषधीय गुण पाएँ जाते हैं, जो आपके बालों के लिए और आँखों की समस्या को दूर करने के लिए उपयोगी है।

मीठी नीम आपको हर मौसम में उपलब्ध है। मीठी नीम में आपको विटामिन बी1, बी3, बी9 और सी पाया जाता है। साथ ही इसमें आपको आयरन, कैल्शियम और फॉस्फोरस भी पाया जाता है। जिन लोगों को सही रक्तचाप न होने की समस्या रहती है, वे रोज 7 से 8 मीठी नीम के पत्ते सुबह खाली पेट ले सकते हैं।

वहीं अगर किसी को आंव या दस्त की समस्या हो, तो मीठी नीम के पत्तों को पानी में उबालकर सेवन करें, इससे दस्त ठीक हो जाएंगे। वहीं, मीठी नीम वैसे तो कई रोगों के लिए अच्छा विकल्प मानी जाती है, लेकिन आंखों के लिए ये अधिक लाभकारी होती है।

मीठी नीम के पत्तों का चूर्ण बना लें और रोज सुबह 1 चम्मच खाली पेट उसे साधारण पानी के साथ लें। इससे आपकी आँखों की समस्या दूर होगी। लेकिन ध्यान रहे आपको पहले पत्तो को धूप में सुखाना होगा, इसके बाद ही आप मीठी नीम के पत्तो का चूर्ण बना सकते हैं। इसकी खास बात यह है कि यह जल्दी खराब नहीं होता है तथा काफी दिनों तक सुरक्षित रहता है।

इसके नियमित सेवन करने से आपके आँखों की समस्या दूर होगी, साथ ही आपके बालों को भी घना बनाने में सहायता होगी।

बायोडाइनैमिक खेती

शुक्ल पक्ष में बोआई और कृष्ण पक्ष में कटाई लाभदायक

राशियों का विभिन्न मुख्य तत्वों से संबंध		
प्रधान तत्व	**प्रभावित भाग**	**राशियाँ**
पृथ्वी	जड़	कन्या, मकर, वृष
जल	पत्ती	कर्क, वृश्चिक, मीन
वायु	फूल	मिथुन, तुला, कुंभ
अग्नि	फल, बीज	मेष, धनु, सिंह

कृषि वैज्ञानिकों ने ग्रह-नक्षत्रों की गति पर आधारित बायोडाइनैमिक खेती की पहल की है। इसके तहत शुक्ल पक्ष में बोआई और कृष्ण पक्ष में फसल की कटाई को काफी लाभदायक पाया गया है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा व पृथ्वी के बीच दूरी कम होने से हवा में नमी होती है। इससे बीज का अंकुरण तेजी से होता है। इस दौरान मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी काफी बढ़ जाती है। देश में बायोडाइनैमिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। कृषि विभाग गांवों में पहुंच कर किसानों को इसका प्रशिक्षण दे रहा है।

पूर्णिमा से दो दिन पहले बरसता है अमृत

मेरठ का कृषि रक्षा विभाग भी किसानों को बायोडाइनैमिक खेती-बाड़ी का गणित बता रहा है। उत्तर प्रदेश कृषि एवं उद्यान विभाग ने अपनी वेबसाइट में बायोडाइनैमिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई है। कृषि रक्षा विभाग के अनुसार, पूर्णिमा से दो दिन पहले बोआई के लिए सर्वश्रेष्ठ समय है। इस दौरान पृथ्वी चांद के सबसे करीब होती है। पृथ्वी पर चुंबकीय बल बढ़ने से समुद्र में ज्वार-भाटा बनता है। वायुमंडल में आर्द्रता ज्यादा होने से पौधों का अंकुरण तेजी से होता है। मिट्टी की उर्वराशक्ति की जांच की गई तो यह सूक्ष्म पोषक जीवाणुओं से लबालब मिली। इसी प्रकार, वैज्ञानिकों ने पाया कि कृष्ण पक्ष यानी अंधियारा पक्ष में चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी ज्यादा होती है। वायुमंडल में शुष्कता बढ़ने से फसलों में नमी खत्म होती है। इसे कटाई एवं मड़ाई का सर्वश्रेष्ठ समय बताया गया है। इन दोनों फार्मूलों से उपज बढ़ती है।

चांदनी रात में गोबर बनेगा अमृत

उपनिदेशक कृषि रक्षा विभाग शैलेंद्र कुमार ने बताया कि कृष्ण पक्ष में गाय के सींग (मृत गाय की देह से प्राप्त) में दुधारू गाय का गोबर डालकर सींग का नुकीला भाग ऊपर रखते हुए इसे किसी छायादार व ऊंची जगह पर 25-30 सेमी गड्ढा बनाकर छह माह के लिए गाड़ देना चाहिए। मसलन, सितंबर में गाड़कर मार्च में निकालें।

उसके बाद इससे निकली खाद को मटके में रख लें। बोआई के दौरान इसका घोल बनाकर (250 ग्राम की मात्रा 250 लीटर पानी में) छिड़काव करने से भूमि की उर्वरा शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। इसे बायोडाइनैमिक उत्प्रेरक कहते हैं। एक दूसरे फार्मूले में गाय के सींग में सिलिका भरकर छह माह के लिए जमीन में गाड़ने से ग्रोथ हार्मोंस पैदा हो जाते हैं। शुक्ल पक्ष में इस रसायन का पौधों पर छिड़काव करने से फसलें तेजी से बढ़ती हैं। किसान चंद्रमा की गति के अनुसार कैलेंडर बनाएं। शुक्ल पक्ष में बुआई और कृष्ण पक्ष में कटाई करें। कई अन्य ग्रह नक्षत्र भी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। कीटनाशकों एवं खाद से मुक्ति पाने के लिए किसानों को चांद की गति पर आधारित खेती की सीख दी जा रही है।

मैंने नक्षत्रों के आधार पर खेती शुरू कर दी है। शुक्ल पक्ष में बुआई का बढ़िया नतीजा दिख रहा है।

— प्रीतम सिंह, किसान, बहादुरपुर

मानस प्रसंग गतांक से आगे —

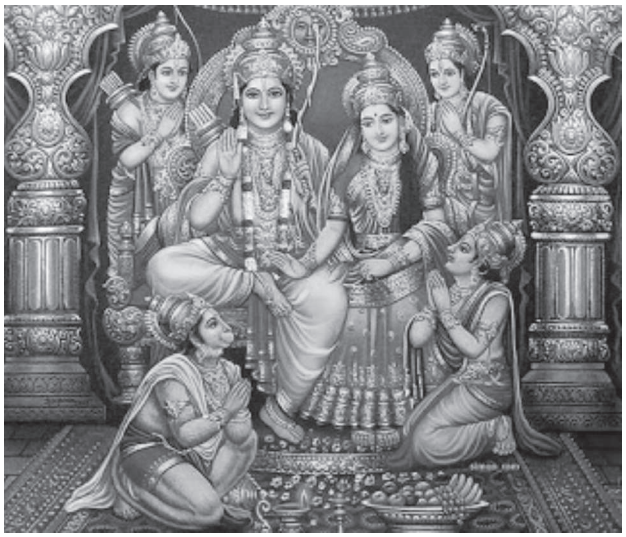

गोस्वामी तुलसीदास जी आगे लिखते है कि माता सती ने इधर उधर जितने रघुनाथ जी देखे उतने ही सब देवता अपनी शक्तियों सहित देखे। संसार में जितने चर व अचर जीव है, वे भी सब भाँति-भाँति के रूपों में देखे। वे लिखते है—

पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा।।
अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता सहित न बेष घनेरे।।

अर्थात् माता सती ने देखा कि विभिन्न रूप धारण कर देवगण भगवान श्रीराम की पूजा कर रहें है, परन्तु उन्हें श्रीराम का कोई दूसरा रूप कहीं देखने को नहीं मिला। सीता सहित श्रीराम तो बहुत सारे दिखे पर उनके वेष अनेक नहीं थे। सब जगह वही श्रीराम जी, वही लक्ष्मण और वही सीताजी का रूप देखकर माता सती भयभीत हो गयी। उन्हें अपनी सुधि-बुधि नहीं रहीं और वे रास्ते में ही आँखें मूँदकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद आँखे खोलकर देखने पर माता सती को कुछ दिखाई नहीं दिया तब वे श्रीराम जी के चरणों में बार-बार प्रणाम कर शिव जी के पास चली गयी। गोस्वामी आगे लिखते हैं—

गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात।
लीन्हि परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात।।

अर्थात् समीप आ जाने पर शिवजी ने हँसकर उनकी कुशलता पूंछी और कहा कि तुमने श्रीराम जी की किस तरह परीक्षा ली, सब बात सत्य-सत्य बताओ। भगवान श्रीराम के प्रभाव से भयभीत माता सती ने शिव जी को सही बात न बताते हुए छिपाव किया और कह दिया कि—

कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं। कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाईं।।
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई। मोरें मन प्रतीति अति सोई।

अर्थात् माता सती ने कहा कि — मैंने कुछ परीक्षा नहीं ली, आपकी ही भाँति प्रणाम कर लौट आई हूँ। आपका कहा हुआ झूठ नहीं हो सकता, मेरे मन में ऐसा दृढ़ विश्वास है। ऐसा सुनकर शंकर जी ने ध्यान लगाकर देखा और माता सती ने जो कुछ किया था, वह सब जान लिया। तब उन्होंने श्रीराम जी की माया को सिर नवाया,जिसने माता सती को प्रेरित करके झूठ कहला दिया। शिवजी मन में विचार करने लगे कि हरि की इच्छा रूपी भावी बलवान है। उनके मन में बड़ा विषाद उत्पन्न हो गया कि सती जी ने माता सीता का रूप धारण किया, अतः यदि अब मैं सती से प्रीति करूँ तो भक्तिमार्ग समाप्त हो जायेगा और बड़ा अन्याय होगा। सती जी की पवित्रता के कारण उन्हें छोड़ते भी नहीं बनता और प्रेम करने से पाप होगा। गोस्वामी जी लिखते है—

परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेम बड़ पापु।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु।।

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

48 माह मोदी सरकार के

छत्तीसगढ़ में विकास की बयार के

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को
सुशासन के 4 वर्ष पूरे होने पर

हार्दिक शुभकामनाएं...

छत्तीसगढ़ शासन

विकास यात्रा

मजबूत अर्थ व्यवस्था खुशहाल प्रदेश

- बीते डेढ़ दशक में कुशल वित्तीय प्रबंधन के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हुई है। अब छत्तीसगढ़ देश के तेजी से विकसित हो रहे राज्यों में शामिल हो गया है।
- राज्य का वर्ष 2003-04 बजट 7328 करोड़ रूपये था, जो अब बढ़कर 83179 करोड़ हो गया है। यह वृद्धि सवा 11 गुना से भी अधिक है।
- प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2003-04 में 12000 रूपये बढ़कर अब 92035 हो गयी है। यह वृद्धि साढ़े सात गुना से भी अधिक है।
- राज्य का सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2003-04 में प्रचलित भावों पर 47000 करोड़ रूपये था, जो अब बढ़कर 2,91,681 करोड़ रूपये हो गया है। यह वृद्धि 6 गुना से अधिक है।
- वर्ष 2018-19 में कुल प्राप्तियां 83,096 करोड़ अनुमानित है।

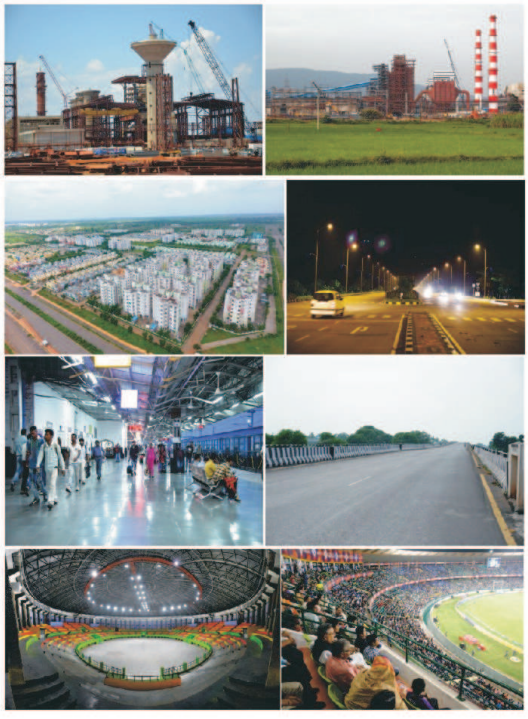

छत्तीसगढ़ संवाद,

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

सबका साथ - सबका विकास

Connect with us:
DPR Chhattisgarh | Dr. Raman Singh

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

लालबहादूर शास्त्री
जयंती ०२ अक्टूबर

महात्मा गांधी
जयंती ०२ अक्टूबर

रानी दुर्गावती
जयंती ०५ अक्टूबर

नानाजी देशमुख
जयंती ११ अक्टूबर

जयप्रकाश नारायण
जयंती ११ अक्टूबर

डॉ. अब्दुल कलाम
जयंती १५ अक्टूबर

स्वामी रामतीर्थ
जयंती २२ अक्टूबर

गणेश शंकर विद्यार्थी
जयंती २६ अक्टूबर

होमी जहाँगीर भाभा
जयंती ३० अक्टूबर

सरदार वल्लभभाई पटेल
जयंती ३१ अक्टूबर

"भविष्य का भारत" विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला में संबोधित करते हुए रा.स्व. संघ के प.पू. सरसंघचालक जी

प्रेषक,

शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - अक्टूबर २०१८

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर
शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427